Airo International Research Journal
Volume XIII, ISSN: 2320-3714
November, 2017
UGC Approval Number 63012

उत्तर आधुनिक हिंदी कहानी और भोगवादी संस्कृति

डॉ॰ ओमप्रकाश
एसोसिएट प्रोफेसर,
स्नातकोत्तर हिंदी विभाग,
आर.के.एस.डी. कॉलेज, कैथल (हरियाणा)

6.0 प्रस्तावना तकनीकी क्रांति, सेवा क्रांति ओर संचार क्रांति को लेकर भारतीय समाज आज एक अजीबो-गरीब बैचेनी के दौर से गुजर रहा है। आल्विन टाफलर ने 'फयूचर शाक' में यह संभावना व्यक्त की थी कि उत्तर औद्योगिक क्रांति का समाज इतिहास के पूरे प्रवाह से कट जाने या विच्छिन्न हो जाने की स्थिति में आ जाएगा। यह स्थिति हमारे सामने है। आज नए साम्राज्यवाद और संस्कृति के बीच ऐसे जटिल रिश्ते उभर रहे हैं कि हमारा पूरा समाज 'स्मृति' के विलुप्त या नष्ट होने का खतरा महसूस कर रहा है। कौन नहीं जानता कि भारतीय सभ्यता और संस्कृति न केवल यूरोप अपितु विश्व के लिए एक बड़ी चुनौती रही है लेकिन अब हालात ऐसे बन रहे है कि हमारी समस्त मर्यादाएँ संचार-क्रान्ति के कारण तार-तार हो रही है। देहवादी-उपभोक्ता-समाज इस हद तक हमें भ्रष्ट एवं विकृत करने पर आमदा है कि हमारी संस्कृति के आत्म-प्रतीक मिथक धूमिल होकर कुम्हलाने लगे है। सब कुछ को 'संदर्भहीन' कर देने की नव पूंजीवादी साजिश ने संस्कृति के भीतरी तंतुजालों को काटने का संकल्प कर लिया है। समाजवादी-साम्यवादी और गांधीवादी चिंतन को इस नए चिंतन में कोई जगह ही नही है। मानवीय मूल्यों तथा आदर्शों के स्थान पर विकृत तथा स्तरहीन सभ्यता को अपनाने पर बल दिया जा रहा है। मनुष्य आत्मकेन्द्रित तथा स्वार्थी हो गया है। स्वार्थी मनुष्य ने रिश्तों की डोर को इतना ढीला बना दिया है कि वह सभी सम्बन्धों को अर्थ की तराजू पर तौलकर देखने लगा है। अब सम्बन्धों का आधार लाभ-हानि के आधार पर तय होता है। यहां तक की वक्त के सम्बन्धों में भी ठहराव नही है यही कारण है कि सम्बन्धों की ऊष्मा तथा स्नेह के अभाव में पला हुआ मनुष्य अत्याधिक टूट-बिखर चुका है। भौतिक स्तर पर तमाम सुख-सुविधाओं से सम्पन्न मनुष्य विश्वास तथा ममता के अभाव में तनाव व अवसाद से ग्रस्त है। अपनी के बीच अकेलेपन से जूझता, असुरक्षा एवं पारिवारिक हिंसा का शिकार मनुष्य गहरे आत्मीय संकट से गुजर रहा है। संयुक्त परिवारों के बिखराव ने मनोरोगी एवं असहाय मनुष्य को इतना निर्मम एवं कठोर बना दिया है कि उसे परिवार के सदस्य न केवल शत्रु दिखाई देते है अपितु वे संपति तथा अधिकार के झगड़े में एक दूसरे की जान के प्यासे बने हुए है।

आर्थिक उन्नति की चाह में मनुष्य एक भेड़चाल का शिकार हो रहा है। गांव को छोड़ शहर तथा शहरों से नगर, महानगर और फिर विदेशों में पलायन करना उसके लिए आर्थिक एवं सामाजिक उन्नति का सबसे बड़ा आधार बन गया है। विकास एक दुधारी तलवार है जो समृद्ध देशों को और अधिक समृद्ध करता है तथा गरीब देशों को जड़मूल से उखाड़कर उसका मटियामेट कर देता है। प्रगति के नाम पर भारत

Airo International Research Journal
Volume XIII, ISSN: 2320-3714
November, 2017
UGC Approval Number 63012

15. 'अरविदं कुमार सिंह, उसका संच, पृ. 38
16. शंकुतला ब्रजमोहन, उलझन, पृ. 20
17. वहीं, पृ. 37
18. शिवमूर्ति, केसर कस्तूरी, पृ. 29
19. अंज दुआ जैमिनी, क्या गुनाह किया, पृ. 31
20. वहीं, पृ. 31
21. ' अमित कुमार सिंह, भूमंडलीकरण और भारत परिदृश्य और विकल्प, पृ. 183
22. 'अमरीक सिंह दीप, एक कोई और, प. 35
23. कथाबिंब जन-मार्च 2011, पृ. 28
24. वागर्थ, जनवरी, 2011, पृ. 49
25. वही, पृ.56
26. कथादेश नवम्बर 2014 पृ. 11
27. हंस नवम्बर, 2004